International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(6): 169-171

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(6): 169-171
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 21-09-2022
Accepted: 25-10-2022

डॉ. निशा गोयल
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, कालिन्दी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. निशा गोयल
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, कालिन्दी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

कृतक कलह का महत्व

डॉ. निशा गोयल

सारांश:
नाटककार विशाखदत्त क्रान्तिकारी नाटककार के रूप में जाने जाते हैं, क्योंकि इनके द्वारा रचित मुद्राराक्षस नामक नाटक राजनीतिपरक हैं। इसके नायक चाणक्य को राजनीति का धुरंधर आचार्य माना जाता है। प्रथम अंक में पूर्णरूपेण चाणक्य की राजनीतिक गतिविधि को बताया गया है तो द्वितीय अंक में राक्षस की।
राजनीतिक नाटक होने के बावजूद भी इसमें रोचकता दूसरे सामान्य नाटकों के समान ही आद्योपान्त बनी रहती है और अन्त तक दर्शको एवं पाठकों के मध्य कथा के विषय में उत्सुकता बरकरार रहती है।
तृतीय अंक में नाटककार ने कौमुदी महोत्सव के माध्यम से चाणक्य और चन्द्रगुप्त के मध्य बनावटी लडाई का आयोजन किया है, जो चाणक्य की राक्षस को वश में करने की योजना का एक अंग है। इसी कारण अन्तिम सप्तम अंक में राक्षस विवश होकर चन्द्रगुप्त के मन्त्री पद को स्वीकार कर लेता है।

कूटशब्द : विशाखदत्त, मुद्राराक्षस, कौमुदी महोत्सव, चाणक्य, चन्द्रगुप्त

प्रस्तावना
मुद्राराक्षस नाटक के तृतीय अंक में विशाखदत्त ने चन्द्रगुप्त और चाणक्य के मध्य हुई कृतक कलह का वर्णन किया है। यह कृतक कलह चाणक्य की कूटनीति का मुख्य आधार है। कृतक कलह वाला तृतीय अंक तीन दृश्यों में बंटा हुआ है- पहले एवं तीसरे दृश्य का स्थान पाटलिपुत्र का राजभवन है, दूसरा दृश्य चाणक्य के घर का है।
इस अंक को पांच भागों में बाटा जा सकता है:-

पहला भाग: कञ्चुकी वैहीनरि का प्रवेश जिसके आने से ये सूचनाएँ मिलती हैं –
- राजा चन्द्रगुप्त ने कौमुदी महोत्सव के मनाये जाने की घोषणा करवाई है। वह चाहता है कि नगर में सजावट की जाए। नागरिक लोग उत्साह से उत्सव मनाए ।
- चाणक्य ने कौमुदी महोत्सव को न मनाए जाने की आज्ञा दी है। चन्द्रगुप्त इस बात को नहीं जानता है।
- चन्द्रगुप्त सुगांग महल की छत पर आकर नगर की शोभा को देखना चाहता है।

दूसरा भाग: कञ्चुकी और चन्द्रगुप्त, इसमें चन्द्रगुप्त अपने स्वगत भाषण में कहता है कि उसे चाणक्य के साथ कृतक कलह करनी है। कुछ समय के लिए स्वतंत्र होकर शासन करना है। कौमुदी महोत्सव का निषेध कृतक कलह की पूर्व भूमिका है।

शरद्काल है, कार्तिकी पूर्णिमा है। राजा देखता है कि नगर में कहीं शोभा नहीं है, उत्सव का कोई चिह्न नहीं है। तब कञ्चुकी चाणक्य के कौमुदी महोत्सव के निषेध के विषय में बताता है जिसे सुनकर चन्द्रगुप्त क्रुद्ध हो जाता है और क्रोध से चाणक्य को बुलवाता है।

तीसरा भाग: चाणक्य और कञ्चुकी । चाणक्य अपने घर में चिन्ता मग्न बैठा है और कृतक कलह के विषय में सोच रहा है, तभी कञ्चुकी आता है तथा चन्द्रगुप्त की आज्ञा को सुनाता है। चाणक्य कारण जानना चाहता है एवं कारण जानकर क्रुद्ध हो जाता है। क्रोध में ही चन्द्रगुप्त से मिलने जाता है।

चौथा भाग: चाणक्य और चन्द्रगुप्त | यह प्रसंग इस अंक का केन्द्र बिन्दु है। इसमें दोनों का कलह होता है। चाणक्य जब चन्द्रगुप्त से मिलने जाता है तब चन्द्रगुप्त पहले उसे प्रणाम करता है चाणक्य उसे चक्रवर्ती सम्राट होने का उशीर्वाद देता है। राजा चन्द्रगुप्त आशंका को प्रकट करता है, कौमुदी महोत्सव को रोके जाने का कारण जानना चाहता है। तब चाणक्य उदण्डता से कहता है कि चन्द्रगुप्त क्योंकि सचिवायत्त सिद्धि वाला राजा है, अतः उसे मंत्री की बातों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। चन्द्रगुप्त क्रोध में आकर बहुत सी बात करता है। चाणक्य पर दोषारोपण करता है तब चाणक्य क्रुद्ध होकर त्यागपत्र देने की बात करता है और जब चन्द्रगुप्त अनेक विषयों में उनसे स्पष्टीकरण मांगता है तब चाणक्य तनकर उत्तर देता है, व्यंग्य बाण छोड़े जाते हैं और अंत मे चाणक्य शस्त्र पटक कर चला जाता है।

अंतिम भाग: उपसंहार। इसमें चन्द्रगुप्त की विचारधारा प्रकट होती है। वह चाणक्य के बनावटी क्रोध को याद करके आत्मग्लानि को प्रकट करता है फिर भी वह कञ्चुकी से कहता है कि अब वह किसी का सेवक नहीं है, वह स्वतन्त्र होकर राज्य करेगा। तब इस कृतक कलह को वास्तविक समझकर कञ्चुकी कहता है:- "दिष्ट्या देव इदानी देव: संवृत्तः।"[1] आप सचमुच इस समय राजा हो गए हैं। मन ही मन चन्द्रगुप्त कामना करता है कि चाणक्य अपने उद्देश्य में सफल होवे, क्योंकि चाणक्य के द्वारा बनाई गई कृतक कलह की योजना रंग ला चुकी है। कृतक कलह की इस योजना का बहुत महत्व है। यह अंक नाटक का सबसे महत्वपूर्ण प्रसंग है। इस कृतक कलह से चाणक्य के क्रोधी स्वभाव का परिचय मिलता है। इस कृतक कलह से चाणक्य के राजनीतिक लक्ष्य की पूर्ति हुई है- 1. कूटनीति के प्रयोग में चाणक्य की कुशलता का इस प्रसंग में परिचय मिलता है, 2. साम, दान, दण्ड, भेद - इन चार उपायों के प्रयोग में चाणक्य कितना कुशल है- इसका ज्वलन्त प्रमाण मिलता है। राजनैतिक दांव पेंच में कैसे खिलाड़ी एक दूसरे को प्रतिस्पर्धा में परास्त करते है - इसका विस्तार से परिचय यहां मिलता है। महान् राजनीतिज्ञ चाणक्य की राजनीति की गहनता का परिचय मिलता है। दैव गति के समान उसकी राजनीति है। चाणक्य के मत में राजनीति में साधनों की अपेक्षा साध्य का महत्त्व है।

राक्षस की अपेक्षा चाणक्य बुद्धि की दृष्टि से अधिक तीक्ष्ण है - इस सत्य का भी यहाँ परिचय मिलता है।

चरित्र चित्रण की दृष्टि से इस प्रसंग में राक्षस और चाणक्य के व्यक्तित्व पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है। अर्थशास्त्र का रचयिता यह चाणक्य बहुत महान् राजनीतिज्ञ है। महान ज्ञान ने ही इसे महान् राजनीतिज्ञ बनाया है। ज्ञान और कर्म का यहाँ अनुपम संगम है।

इसी अंक में चन्द्रगुप्त के विनम्र स्वभाव का भी परिचय मिलता है। वह आदर्श शिष्य है। गुरु के प्रति उसकी श्रद्धा का इस अंक के अंत में पूर्ण परिचय मिलता है।

तत्कालीन राजनैतिक अवस्था का भी पूर्ण परिचय इस अंक में मिलता है। उस समय के राजनीति के धरातल पर जो कुछ भी किया जाता रहा है, उस सब का विस्तार से यहाँ परिचय मिलता है।

राक्षस के पराक्रम और वीरतापूर्ण कार्यों तथा षड्यन्त्रों के कुशल प्रयोग का भी इस अंक में परिचय मिलता है । जब वह वैतालिकों को भेजकर चन्द्रगुप्त की प्रशंसा करवाता है, ताकि चन्द्रगुप्त भड़के ।

इसी प्रसंग में गुरु और शिष्य के मध्य जो सम्बन्ध आवश्यक है, उनका भी परिचय मिलता

है। शिष्य के विकास में गुरु अनुशासन लाने वाला महान् अंकुश है।

"इह विरचयंसाध्वीं शिष्यः क्रियां न निवार्यते
त्यजति तु यदा मार्गं मोहात्तदा गुरुरङ्कुशः॥"[2]

इस प्रसंग में ही कवि की व्यंजना शक्ति का भी परिचय मिलता है। अनेक पात्रों के वाक्यों में व्यंग्यात्मक शैली का दर्शन होता है। यह अंक नाटक का बिंदु है। चाणक्य के गंभीर स्वभाव का भी यहाँ परिचय मिलता है। क्रोधी रूप की भी झलक मिलती हैं। नियताप्ति नामक कार्य की अवस्था का भी इस अंक में वर्णन है। कथोपकथन या संवाद की दृष्टि से यह कृतक कलह बहुत आकर्षक है। अभिनय के योग्य है। चाणक्य और चन्द्रगुप्त के विवाद में अनेक सूक्तियां भी है, यथा- "दैवं अविद्वांसः प्रमाणयन्ति"।[3]

विशाखदत्त की उत्कृष्ट काव्य कला का भी यहाँ परिचय मिलता है। "शठे शाठ्यं समाचरेत्"- 'जैसे को तैसा' यही सिद्धान्त राजनीति का आधार है। इसी को लेकर यह पूर्ण अंक रचा गया है। यहाँ गर्भ सन्धि की संयोजना भी

सफलता से हुई है। अभिनय की दृष्टि से यह सफलतम अंक है।

इस प्रकार हम यह कह सकते है कि इस कृतक कलह से दो महत्त्वपूर्ण तथ्य निकलते हैं-

1. राक्षस के पराक्रम का परिचय
2. राक्षस की बुद्धि का उसके साथ टकराव एवं भेद नीति का सफल प्रयोग

अत: चरित्र चित्रण की दृष्टि से, कथावस्तु की दृष्टि से, संवाद की दृष्टि से यह कृतक कलह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह नाटक का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंक है।

सन्दर्भ

1. मुद्राराक्षस, तृतीय अंक, पृष्ठ 206
2. वही, श्लोक 6
3. वही, पृष्ठ 200
4. मुद्राराक्षस, डॉ. निरूपण विद्यालंकार, मेरठ: साहित्य भंडार, 1976.
5. मुद्राराक्षस, डॉ. राकेश शास्त्री, दिल्ली: चौखम्भा ओरियन्टालिया, 2019.